उच्च प्राथमिक विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकीय दबाव एवं अभिभावकीय सहभागिता तथा विद्यालयी वातावरण का प्रभाव

प्रतिभा गुप्ता*
शिल्पी कुमारी**

यह शोध पत्र अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता तथा विद्यालयी वातावरण (विद्यालय का प्रकार) संयुक्त तथा पृथक रूप से किस सीमा तक विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं, को बताता है। यह शोध अध्ययन वर्णनात्मक शोध के अंतर्गत सर्वेक्षण प्रविधि पर आधारित मात्रात्मक शोध अध्ययन था। इस शोध में न्यादर्श के रूप में महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के न्यादर्श की लॉटरी विधि से चयनित दो सी.बी.एस.ई. एवं दो राज्य शिक्षा बोर्ड से संबंधित विद्यालयों में से प्रत्येक विद्यालय से उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा 7) के 10–10 छात्र-छात्राओं का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा किया गया तथा इन्हीं चयनित विद्यार्थियों के अभिभावकों (कुल 80) को भी न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया था। इस शोध में 'विद्यार्थियों पर अभिभावकीय दबाव तथा अभिभावकीय सहभागिता' को मापने के लिए शोधार्थी द्वारा स्व-निर्मित तीन बिंदुओं वाली निर्धारण मापनी का उपयोग किया गया था। इस अध्ययन में संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए बहुप्रतीपगमन सांख्यिकी तकनीक का उपयोग किया गया था। इस विश्लेषण से प्राप्त परिणाम दर्शाते हैं कि अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालयी वातावरण संयुक्त रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को पूर्वानुमानित नहीं करती है, किंतु अभिभावकीय सहभागिता पृथक रूप से विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में सार्थक योगदान देती है।

वर्तमान दौर प्रतिस्पर्धा का है। आज प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को उत्कृष्ट और सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए लगातार अत्यधिक कठिन परिश्रम करता है। जब कोई व्यक्ति अपने सपने को पूरा नहीं कर पाता है, तो वह अपने उन सपनों को साकार करने के लिए अपने बच्चों से अधिक आकांक्षा एवं अपेक्षा रखता है। इस हेतु वह व्यक्ति अपने बच्चों की शैक्षिक स्थिति को उत्तम बनाने हेतु स्वयं कई गतिविधियों में संलग्न रहता है और बच्चों पर उत्तम परिणाम प्राप्त करने का दबाव डालता है, जिससे वे अपने शैक्षिक क्षेत्र में उत्तम प्रदर्शन कर सकें। इस प्रकार, अभिभावक की अत्यधिक उपलब्धि की चाह कभी-कभी विद्यार्थियों

**शोधार्थी*, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442 005
***सहायक प्राध्यापक*, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442 005

© NCERT not to be republished

को अभिप्रेरित न करके उनमें विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक रोग पैदा करती है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

आमतौर पर यह माना जाता है कि अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा शोध साहित्य दर्शाते हैं कि सभी उम्र के बच्चों के लिए अभिभावकों की भागीदारी काफ़ी फ़ायदेमंद है (कॉक्स, 2005; डेसफोर्गेस एवं अबोचैर, 2003; ईक्लेज और हेरोल्ड, 1993; एपस्टीन, 2001)। विद्यार्थियों की उपलब्धि बढ़ाने के लिए सबसे बढ़िया तरीकों में से एक तरीका उनके परिवार को शामिल करना है।

एशियाई संस्कृति में विशेष रूप से सभी अभिभावकों के लिए अपने बच्चों के प्रति कर्तव्य एवं ज़िम्मेदारी एक महत्वपूर्ण मूल्य है। भारतीय अभिभावक अपने बच्चों की सफलता से बहुत गर्व महसूस करते हैं, वे अपने बच्चों की अकादमिक उपलब्धि के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उनके साथ समय भी व्यतीत करते हैं तथा आर्थिक त्याग करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं (फुल्गिनी और पेडरसन, 2002)। एशियाई बच्चे अपने अभिभावकों की उच्चस्तरीय उम्मीदों को पूरा करने के लिए उनकी ज़िम्मेदारियों को समझते हैं एवं उनसे प्रेरणा प्राप्त करते हैं (चाऊ और चू, 2007)। इस कारण एशियाई बच्चे शैक्षिक सफलता प्राप्त करने के लिए अपने अभिभावकों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में दबाव महसूस करते हैं।

अभिभावक हमेशा अपने बच्चों के लिए सर्वश्रेष्ठ चाहते हैं, जैसे— वैश्विक प्रतिस्पर्धा एवं अर्थव्यवस्था में आकर्षक जीवनयापन की चाह। बच्चों को इन उम्मीदों को पूरा करने के लिए विद्यालय में अच्छा प्रदर्शन करना होता है। कई अभिभावक अपने बच्चों को उच्च उपलब्धि अर्जित करने के लिए गहरा दबाव डालते हैं। इस तरह के गहन दबाव बच्चों में सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक तनाव उत्पन्न कर सकते हैं। किशोरों पर शैक्षिक क्षेत्र एवं खेल के मैदान में सफल होने का बहुत अधिक दबाव होता है। यह दबाव उनके शिक्षकों, अभिभावक एवं स्वयं से उत्पन्न होता है। बच्चों पर अधिक दबाव डालना सामान्य बात है। यह जानना भी आवश्यक है कि बच्चों पर यह दबाव कब एवं कितना सहायक है या यह दबाव कब तनाव उत्पन्न करता है।

कैलिफोर्निया में जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय के एक अध्ययन (एब्लॉर्ड, हॉफिन्स और मिल्स, 1996) के परिणाम बताते हैं कि 92 प्रतिशत अभिभावकों ने महसूस किया कि उनके बच्चों के लिए विद्यालय में उत्कृष्टता हासिल करना महत्वपूर्ण था। जबकि 39 प्रतिशत विद्यार्थियों ने महसूस किया कि उन पर बहुत अधिक दबाव था। बहुत अधिक दबाव बच्चे के आत्मसम्मान को नुकसान पहुँचाता है और अवसाद सहित गंभीर बीमारियों का कारण बन सकता है, जैसे— सिर दर्द, पेट दर्द, गर्दन दर्द, नींद की कमी, चिंतित होना आदि। सेंट थामस विश्वविद्यालय में किए गए एक अध्ययन के मुताबिक, यदि विद्यार्थी अपने अभिभावकों की अपेक्षाओं को पूरा नहीं कर पाते हैं, तो उनमें हीनता की भावना पैदा होती है तथा किशोरों में आत्महत्या की प्रवृत्ति भी पैदा होती है।

एक शोध अध्ययन में पाया गया कि बच्चों पर अत्यधिक दबाव का कोई अकादमिक लाभ नहीं होता

© NCERT not to be republished

है। साथ ही, इससे उनके रचनात्मक एवं संवेगात्मक विकास में भी नुकसान होने की संभावना रहती है (हाइसन एवं पासेक, रिकोरल, बॉइनसेक 1991)। विद्यालय में बच्चों का अच्छा प्रदर्शन करने में उनके अभिभावकों का दबाव उनकी सहायता नहीं करता है, बल्कि इसका बच्चों के प्रदर्शन पर विपरीत प्रभाव भी हो सकता है, जो बच्चों के व्यक्तित्व को नुकसान पहुँचा सकता है। यदि हम अपने बच्चों को विद्यालय में अच्छी तरह से सहयोग करना चाहते हैं, तो हमें दबाव डालने के बजाय प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। विद्यालय के कार्यों में सहायता एवं विभिन्न विचारों और अवधारणाओं पर चर्चा करने जैसे साधनों के माध्यम से प्रोत्साहन प्रदान करके हम बच्चों को प्रेरित कर सकते हैं।

अभिभावकीय सहभागिता क्या है?

शिक्षा के समर्थन में स्कूल, परिवार और समुदाय मिलकर काम करते हैं, जिससे विद्यालय में बच्चों का प्रदर्शन बेहतर होता है। दक्षिण पश्चिम शैक्षणिक विकास प्रयोगशाला (2002) की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले दशक में अभिभावकों की भागीदारी पर शोध में पाया गया कि परिवार की आय या पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, अभिभावकों के साथ जुड़े विद्यार्थी निम्नलिखित आयामों में अधिक संभावना रखते हैं —

- उच्च ग्रेड एवं टेस्ट स्कोर अर्जित करें तथा उच्च स्तरीय शैक्षिक कार्यक्रमों में भर्ती कराएँ।
- अपनी कक्षाएँ उत्तीर्ण करें, क्रेडिट अर्जित करें और पदोन्नति करें।
- विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थित रहें।
- बेहतर सामाजिक कौशल प्राप्त करें, बेहतर व्यवहार दिखाएँ और विद्यालय में अच्छी तरह से अनुकूलन करें।

अभिभावकों की भागीदारी विद्यार्थियों की ज़रूरतों के अनुसार उनके अधिकारों की रक्षा में मदद करती है। इसके अलावा, उनमें विभिन्न शिक्षार्थियों का प्रतिनिधित्व करने की प्रवृत्ति होती है। सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित अल्पसंख्यक विद्यार्थी अभिभावकों द्वारा विशेष शिक्षा सेवाएँ प्राप्त करते हैं। इन विशेष विद्यार्थियों के लिए अभिभावकों की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है (टोर्रेतेहर्नान्डेज एवं वजसोनयी, 2008)।

जू, बेन्सन, मुड्रे-कैमिनो और स्टीनर (2010) का मानना है कि अभिभावकों की अपने बच्चों के गृहकार्य में भागीदारी, उन्हें बच्चों के बारे में अच्छी तरह से सूचित रखने के लिए एक उपकरण हो सकता है। वे विशेष रूप से पढ़ने वाले कई विषय क्षेत्रों में बच्चों की क्षमता और कमज़ोरियों का पता लगाते हैं। सक्रिय रूप से शामिल अभिभावक बच्चों की रुचि बढ़ाने में सहायता करते हैं। यह भी माना जाता है कि विद्यालयी गतिविधियों में सकारात्मक रूप से शामिल अभिभावक विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पूर्व किशोरावस्था की शैक्षिक सफलता के लिए अभिभावक की भागीदारी महत्वपूर्ण है, परंतु जब बच्चा मध्यम ग्रेड में प्रवेश करता है, तो अभिभावकीय सहभागिता कम हो जाती है (एपस्टीन, 2005)।

अभिभावकीय सहभागिता को स्कूली शिक्षा में जागरूकता और भागीदारी के रूप में परिभाषित

© NCERT not to be republished

किया गया है, स्कूली शिक्षा में अभिभावकों की सहभागिता परवरिश, कौशल और विद्यार्थियों की सफलता या असफलता के बारे में उनसे बातचीत एवं उनके भावों को समझना तथा विद्यार्थियों की प्रगति के बारे में शिक्षकों के साथ लगातार संप्रेषण की प्रतिबद्धता से है। अभिभावक शब्द जैविक माता-पिता, गोद लेने वाले माता-पिता एवं सौतेले माता-पिता से संदर्भित है। अभिभावक की भागीदारी का मतलब अभिभावक की बच्चों एवं शिक्षकों के साथ अकादमिक शिक्षा और अन्य विद्यालयी गतिविधियों में सहभागिता है, जो यह सुनिश्चित करता है कि अभिभावक अपने बच्चों की उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शोध का औचित्य

अभिभावकीय दबाव एवं शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित विभिन्न शोध अध्ययनों से प्राप्त परिणामों में बहुत अधिक भिन्नता दिखाई देती है, जैसे— संगमा और शांतिबाला (2018); नागपाल, (2016); शर्मा (2014); चेन (2012) के अध्ययन से प्राप्त परिणाम यह प्रदर्शित करते हैं कि अभिभावकीय दबाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर ऋणात्मक प्रभाव डालते हैं। मैकमिलन (1998) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि अभिभावकीय दबाव का विद्यालय के प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, यदि अभिभावक विद्यालयी गतिविधियों में आंतरिक रूप से संलग्न होते हैं। अतः अभिभावकीय दबाव एवं शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में उत्पन्न विरोधाभासों को दूर करने के लिए तथा वास्तविक स्थिति को जानने हेतु यह शोध किया गया था।

अभिभावकों की भागीदारी विद्यार्थियों की ज़रूरतों के अनुसार उनके अधिकारों की रक्षा में मदद करती है (टोर्रेतेहर्नान्डेज वजसोनयी और 2008)। विद्यालयी गतिविधियों में सकारात्मक रूप से शामिल अभिभावक विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (जू, बेन्सन, मुड्रे-कैमिनो और स्टीनर, 2010)। पूर्व किशोरावस्था में शैक्षिक सफलता के लिए भी अभिभावकों की भागीदारी महत्वपूर्ण होती है, परंतु जब बच्चा मध्यम ग्रेड में प्रवेश करता है, तो अभिभावकीय सहभागिता कम हो जाती है (एपस्टीन, 2005)। अतः शोधार्थी इस शोध अध्ययन के लिए निर्दिष्ट हुआ कि पूर्व प्राथमिक स्तर पर, जब विद्यार्थी पूर्व-किशोरावस्था में होता है, अभिभावकीय सहभागिता का स्तर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को किस सीमा तक प्रभावित करता है।

मैकमिलन (1998) अपने शोध अध्ययन के आधार पर बताते हैं कि निजी विद्यालयों में व्याप्त अधिकाधिक प्रतिस्पर्धापूर्ण वातावरण विद्यालय के प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। यह प्रतिस्पर्धा की सकारात्मक उत्पादकता के दृष्टिकोण का विरोध करता है। साथ ही, यह अनुभव किया गया है कि अलग-अलग प्रकार के विद्यालयों में अलग-अलग तरह की पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन किया जाता है, इन विद्यालयों की गतिविधियों में अभिभावकों की सहभागिता के स्तर तथा विद्यार्थियों के मध्य प्रतिस्पर्धा के स्तर में भी अंतर होता है। अतः इस शोध अध्ययन में शोधार्थी यह जानने के लिए निर्दिष्ट हुआ कि विद्यालयों का वातावरण किस

© NCERT not to be republished

सीमा तक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

साथ ही, संबंधित शोध साहित्य दर्शाते हैं कि गत वर्षों में किए गए शोध कार्यों में से अधिकांश शोध माध्यमिक स्तर या इससे उच्च स्तरों पर किए गए हैं। साथ ही, अब तक जो भी शोध कार्य हुए हैं, उनमें से अधिकतर महानगरों में किए गए हैं। अर्द्ध शहरी क्षेत्रों या छोटे शहरों में अभिभावकीय दबाव की क्या स्थिति है तथा यह विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को किस सीमा तक प्रभावित करता है, यह जानने का व्यापक रूप से प्रयास नहीं किया गया है। उपरोक्त चर्चा के आधार पर इस शोध अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया कि अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय का वातावरण (विद्यालय का प्रकार) संयुक्त तथा पृथक रूप से किस सीमा तक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

शोध का समस्या कथन

इस शोध अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया था कि वर्धा जैसे छोटे शहर में अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता तथा विद्यालय का प्रकार संयुक्त तथा पृथक रूप से किस सीमा तक उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। अतः इस शोध का समस्या कथन, "उच्च प्राथमिक विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता तथा विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन था।"

शोध में प्रयुक्त चरों का अर्थ

अभिभावकीय दबाव— विद्यार्थियों द्वारा उनके अभिभावकों की आकांक्षा, उनकी अकादमिक सहभागिता, साथ ही विद्यालय वातावरण के प्रभाव के परिणामस्वरूप बेहतर शैक्षिक प्रदर्शन हेतु किए जाने वाले दबाव को अभिभावकीय दबाव के रूप में परिभाषित किया गया है। इस शोध अध्ययन में यह स्वतंत्र या भविष्यसूचक चर है।

अभिभावकीय सहभागिता— विद्यार्थियों के दैनिक कार्यों में अभिभावकों द्वारा किए जाने वाले सहयोग को अभिभावकीय सहभागिता कहा गया है। इस शोध अध्ययन में यह स्वतंत्र या भविष्यसूचक चर है।

विद्यालय का प्रकार— केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.) एवं राज्य शिक्षा बोर्ड (महाराष्ट्र) से विद्यालयों का संबद्धीकरण ही विद्यालयों के वर्गीकरण का आधार है। विद्यालयों के प्रकार के अंतर्गत वर्धा जिले के केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध विद्यालय तथा राजकीय विद्यालय हैं।

शैक्षिक उपलब्धि— इस शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थियों के द्वारा, जिस कक्षा में वे पढ़ रहे हैं, उस कक्षा के लिए संपन्न अर्द्धवार्षिक परीक्षा के विभिन्न विषयों में प्राप्त कुल प्राप्तांकों से है। इस शोध अध्ययन में यह अंतराल मापनी पर आधारित आश्रित चर है।

शैक्षिक उपलब्धि का पूर्वानुमान— इस शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान से तात्पर्य बहुप्रतीपगमन सांख्यिकी तकनीक के माध्यम से

© NCERT not to be republished

शोध में सम्मिलित भविष्यसूचक/स्वतंत्र चर, जैसे— अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय का प्रकार में कुछ निश्चित मात्रा में परिवर्तन पृथक तथा संयुक्त रूप से उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में किस मात्रा में परिवर्तन लाता है, इसका अनुमान लगाना है।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य थे —

- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय के प्रकार के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय के प्रकार के संयुक्त रूप से योगदान का अध्ययन करना।
- विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय के प्रकार के योगदान का पृथक रूप से अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की निम्न शून्य परिकल्पनाएँ थीं—

- Ho_1— विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय के प्रकार के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।
- Ho_2— विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय के प्रकार का संयुक्त रूप से कोई सार्थक योगदान नहीं है।
- Ho_3— विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय के प्रकार का पृथक रूप से कोई सार्थक योगदान नहीं है।

शोध का परिसीमन

यह शोध अध्ययन महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के अंतर्गत केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राज्य शिक्षा बोर्ड (महाराष्ट्र) से संबद्ध विद्यालयों के उच्च प्राथमिक स्तर के कक्षा 7 के विद्यार्थियों तक ही सीमित था।

शोध का प्रकार

यह शोध वर्णानात्मक शोध के अंतर्गत मात्रात्मक शोध प्रविधि पर आधारित है। यह सर्वेक्षण पर आधारित शोध अध्ययन था।

जनसंख्या

इस शोध अध्ययन में महाराष्ट्र राज्य के वर्धा जिले के कक्षा 7 के केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राज्य शिक्षा बोर्ड (महाराष्ट्र) से संबद्ध विद्यालय के विद्यार्थी और इन्हीं विद्यार्थियों के अभिभावकों को जनसंख्या के रूप में शामिल किया गया था।

न्यादर्श

इस शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में वर्धा जिले के केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं राज्य शिक्षा बोर्ड (महाराष्ट्र) से संबद्ध विद्यालयों में से प्रत्येक से दो-दो विद्यालयों का चयन लॉटरी विधि से किया गया।

© NCERT not to be republished

चयनित प्रत्येक विद्यालय से कक्षा 7 में अध्ययनरत 20 विद्यार्थियों (10 छात्रों एवं 10 छात्राओं) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा किया गया तथा चयनित विद्यार्थियों के अभिभावकों (कुल 80) को भी न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया था। न्यादर्श के रूप में विद्यार्थियों तथा अभिभावकों का वितरण क्रमशः तालिका 1 तथा तालिका 2 में दर्शाया गया है।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन में विद्यार्थियों में अभिभावकीय दबाव को मापने एवं अभिभावकीय सहभागिता को मापने के लिए शोधार्थी द्वारा स्व-निर्मित तीन बिंदुओं वाली निर्धारण मापनी का उपयोग किया गया। अभिभावकीय दबाव के मापन के लिए निर्धारण मापनी में विद्यार्थियों द्वारा महसूस किए जा रहे अभिभावकीय दबाव के प्रत्येक पहलू को ध्यान में

तालिका 1— न्यादर्श के रूप में विद्यार्थियों का वितरण

क्र.स.	विद्यालय का नाम	प्रतिदर्श की प्रकृति	चयनित प्रतिदर्श इकाई की संख्या	योग
1.	केंद्रीय विद्यालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय परिसर, वर्धा	छात्र	10	20
		छात्राएँ	10	
2.	महर्षि विद्या मंदिर, वर्धा	छात्र	10	20
		छात्राएँ	10	
3.	रत्नीबाई हाई स्कूल, वर्धा	छात्र	10	20
		छात्राएँ	10	
4.	न्यू इंग्लिश जूनियर हाई स्कूल, वर्धा	छात्र	10	20
			10	
योग		छात्र	40	80
		छात्राएँ	40	

तालिका 2— न्यादर्श के रूप में अभिभावकों का वितरण

क्र.स.	विद्यालय का नाम	चयनित प्रतिदर्श की संख्या
1.	केंद्रीय विद्यालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय परिसर, वर्धा (सी.बी.एस.ई.)	20
2.	महर्षि विद्या मंदिर, वर्धा (सी.बी.एस.ई.)	20
3.	रत्नीबाई हाई स्कूल, वर्धा (महाराष्ट्र बोर्ड)	20
4.	न्यू इंग्लिश जूनियर हाई स्कूल, वर्धा (महाराष्ट्र बोर्ड)	20
योग		80

© NCERT not to be republished

रखकर 20 सकारात्मक तथा 15 नकारात्मक कथनों का निर्माण किया गया। इसी प्रकार अभिभावकीय सहभागिता के मापन के लिए निर्धारण मापनी में 25 सकारात्मक तथा 20 नकारात्मक कथनों का निर्माण किया गया। दोनों ही निर्धारण मापनी के प्रत्येक कथन के लिए तीन बिंदु दिए गए थे — कभी नहीं, कभी-कभी एवं सदैव।

अभिभावकीय दबाव तथा अभिभावकीय सहभागिता को मापने के लिए विकसित निर्धारण मापनी की विषय-वस्तु वैधता की जाँच महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के शिक्षा विभाग के अनुभवी शिक्षकों द्वारा विषय-विशेषज्ञ के रूप में की गई और उनके परामर्श के आधार पर मापनी में आवश्यक सुधार किए गए। कुछ कथनों में आवश्यक संशोधन किया गया तथा अनावश्यक कथनों को मापनी से हटा दिया गया। अंतत: अभिभावकीय दबाव तथा अभिभावकीय सहभागिता निर्धारण मापनी में क्रमशः 12 सकारात्मक एवं नौ नकारात्मक कथन थे तथा 19 सकारात्मक एवं 12 नकारात्मक कथन थे।

अभिभावकीय दबाव एवं अभिभावकीय सहभागिता निर्धारण मापनी की विश्वसनीयता (स्थायित्व) ज्ञात करने के लिए परीक्षण, पुनः परीक्षण विधि का उपयोग किया गया। अभिभावकीय दबाव निर्धारण मापनी का प्रशासन न्यादर्श के लिए चयनित विद्यालयों में से प्रत्येक विद्यालय के कक्षा 7 के पाँच-पाँच छात्र एवं छात्राओं तथा अभिभावकीय सहभागिता निर्धारण मापनी का प्रशासन इन विद्यार्थियों के अभिभावकों पर किया गया। प्रथम प्रशासन के 10 दिनों के अंदर इसका पुनःप्रशासन उन्हीं विद्यार्थियों तथा उनके अभिभावकों पर किया गया। तत्पश्चात् परीक्षण एवं पुनः परीक्षण द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के मध्य स्पीयरमेन सहसंबंध गुणांक की गणना की गई। अभिभावकीय दबाव के मापन हेतु निर्धारण मापनी के लिए सह-संबंध गुणांक का मान 0.72 था, अभिभावकीय सहभागिता के मापन हेतु निर्धारण मापनी के लिए इसका मान 0.77 था, जो शोध अध्ययन के लिए मापनी की अच्छी विश्वसनीयता प्रदर्शित करता है।

प्रदत्त संकलन प्रक्रिया

शोध अध्ययन हेतु शोधार्थी द्वारा न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों के विद्यार्थियों एवं उनके ही अभिभावकों पर अलग-अलग मापनी प्रशासित कर आँकड़ों का संग्रहण किया गया। अभिभावकों से आँकड़ों के संग्रहण के लिए शोधार्थी ने विद्यालय में जाकर प्रधानाचार्य से अनुमति लेकर प्रयोज्य के लिए चयनित विद्यार्थियों के माध्यम से अभिभावकों से सौहार्द स्थापित किया गया। विद्यार्थियों को अभिभावकीय दबाव निर्धारण मापनी तथा अभिभावकों को अभिभावकीय सहभागिता निर्धारण मापनी दी गई और उन्हें मापनी में दिए गए निर्देशों से अवगत कराया गया। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि हेतु उनकी विगत परीक्षा (अर्द्धवार्षिक परीक्षा) के परिणामों (प्राप्तांकों) का उपयोग किया गया।

निर्धारण मापनी में सकारात्मक तथा नकारात्मक, दोनों प्रकार के पदों/कथनों को रखा गया था, सकारात्मक पदों के उत्तर कभी नहीं के

© NCERT not to be republished

लिए '0' अंक, उत्तर कभी-कभी के लिए '1' अंक तथा उत्तर सदैव के लिए '2' अंक प्रदान किए गए। नकारात्मक पदों के उत्तर सदैव के लिए '0' अंक, उत्तर कभी-कभी के लिए '1' अंक तथा उत्तर कभी नहीं के लिए '2' अंक प्रदान किए गए।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना Ho_1— विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय के प्रकार के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है, के लिए प्रदत्तों का विश्लेषण तालिका 3 में दिया गया है—

तालिका 3 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न चरों के मध्य निम्नलिखित सहसंबंधात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं, जिनकी व्याख्या इस प्रकार है—

- शैक्षिक उपलब्धि और अभिभावकीय दबाव के मध्य अत्यंत निम्न कोटि का ऋणात्मक सहसंबंध है, जिसका मान –.044 है तथा प्रायिकता (P) मान .350 है, जो.05 सार्थकता स्तर के प्रायिकता मान से अधिक है, अतः यह .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इसका कारण संभवतः यह हो सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अभिभावकों की आकांक्षा तथा अभिभावकीय हस्तक्षेप का स्तर इतना अधिक नहीं होता कि विद्यार्थियों पर अत्यधिक दबाव बना सके।
- तालिका 3 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और अभिभावकीय सहभागिता के मध्य निम्न कोटि का धनात्मक सहसंबंध है, जिसका मान .238 है तथा प्रायिकता मान .017 है, जो.05 सार्थकता स्तर के प्रायिकता मान से कम है, अतः यह .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इस सार्थकता का कारण यह हो सकता है कि कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों की आयु कम होती है। इसलिए वे अपने अभिभावकों पर गृहकार्य, प्रदत्त कार्य, परियोजना कार्य, परीक्षा की तैयारी आदि के लिए आश्रित रहते हैं, इस कारण अभिभावकीय सहभागिता सकारात्मक होती है, जो उन्हें शैक्षिक उपलब्धि के लिए प्रोत्साहित करती है। वहीं दूसरी ओर ऐसा प्रतीत होता है कि अभिभावकों तथा विद्यार्थियों में नकारात्मक प्रतिस्पर्धा की भावना नहीं होती होगी।
- तालिका 3 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि और विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के मध्य अत्यंत निम्न कोटि का धनात्मक सहसंबंध .164 है, जिसका प्रायिकता मान .072 है, जो .05 सार्थकता स्तर के प्रायिकता मान से अधिक है, अतः यह .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इसका कारण संभवतः यह हो सकता है कि है कि वर्धा जिले के सी.बी.एस.ई. तथा स्टेट बोर्ड के विद्यालयों का वातावरण तथा कार्य करने के तरीकों में कोई ऐसा महत्वपूर्ण अंतर नहीं है कि अभिभावकों की सहभागिता को प्रभावित करे तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो।

© NCERT not to be republished

तालिका 3— विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय के प्रकार के मध्य सहसंबंध

चरों के अनुसार सहसंबंध		विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	विद्यार्थियों पर अभिभावकीय दबाव	विद्यार्थियों को अभिभावकीय सहभागिता	विद्यालयों के प्रकार
पियर्सन सहसंबंध	विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	1.000	−.044*	.238*	.164*
	विद्यार्थियों पर अभिभावकीय दबाव	−.044*	1.000	.201	−.287
	विद्यार्थियों को अभिभावकीय सहभागिता	.238*	.201	1.000	.011
सार्थकता (एक पुंच्छीय)	विद्यालयों का प्रकार	.164*	−.287	.011	1.000
	विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि	—	.350*	.017*	.072*
	विद्यार्थियों पर अभिभावकीय दबाव	.350*	—	.037	.005
	विद्यार्थियों को अभिभावकीय सहभागिता	.017*	.037	—	.462
	विद्यालयों का प्रकार	.072*	.005	.462	—

*.05 सार्थकता स्तर

परिकल्पना Ho_2— विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय के प्रकार का संयुक्त रूप से कोई सार्थक योगदान नहीं है

तालिका 4 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि, r बहुगुणी सहसंबंध गुणांक के मान का प्रतिनिधित्व करता है, जिससे चरों में होने वाले परिवर्तन प्रसरण का पता लगाया जाता है। समायोजित r2 मान .049 है, जो यह दर्शाता है कि यह मॉडल 4.9 प्रतिशत शैक्षिक उपलब्धि का अनुमान लगाता है। अन्य चर 95.1 प्रतिशत शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित कर सकते हैं। इसका निर्धारण प्रतीपगमन मॉडल द्वारा किया गया है। तालिका 4 का अवलोकन करने

© NCERT not to be republished

तालिका 4— अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में संयुक्त रूप से योगदान का प्रतीपगमन मॉडल

मॉडल	r	r2	एडजस्टेड r2	स्टैण्डर्ड एरर ऑफ़ द एस्टीमेट
1	.291	.085	.049	7.385

पर यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय के प्रकार के मध्य संयुक्त रूप से कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

तालिका 5 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि F का मान 2.351 है, जिसका प्रायिकता मान (P मान) .079 है, जो कि .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसका कारण यह हो सकता है कि अभिभावकीय सहभागिता, अभिभावकीय दबाव एवं विद्यालय के प्रकार का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में संयुक्त रूप से सार्थक योगदान नहीं है। इसका एक अन्य कारण यह भी हो सकता है कि वर्धा में अभिभावकीय हस्तक्षेप का स्वरूप सामान्यतः सकारात्मक होगा। वर्धा महानगर की श्रेणी में नहीं आता है तथा यहाँ समाज, विद्यालय तथा परिवार का माहौल ऐसा नहीं होता कि अभिभावकीय हस्तक्षेप अत्यधिक हो तथा नकारात्मक रूप लेते हुए शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों में अधिक दबाव उत्पन्न कर सके।

परिकल्पना Ho_3— विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता एवं विद्यालय के प्रकार का पृथक रूप से कोई सार्थक योगदान नहीं है

तालिका 6 से यह प्रदर्शित होता है कि पृथक रूप से प्रत्येक चर आश्रित चर के पूर्वानुमान में निहतांक को प्रदर्शित करता है। अभिभावकीय दबाव का बीटा मान –.051 एवं t-मान –.435 है, जिसका प्रायिकता मान .665 है, जो .05 सार्थकता स्तर के प्रायिकता मान से अधिक है, अतः यह .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। यह पृथक रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में कोई सार्थक योगदान नहीं देता है। इसका कारण संभवतः यह हो सकता है कि वर्धा जैसे शहर में उच्च प्राथमिक विद्यालयी स्तर के विद्यार्थियों पर अभिभावकों की आकांक्षा तथा हस्तक्षेप का स्तर ऐसा प्रतीत नहीं होता कि वह अभिभावकीय दबाव उत्पन्न कर सकें।

तालिका 5— प्रसरण विश्लेषण (एनोवा)

मॉडल		वर्गों का योग	स्वातन्त्रांश संख्या	मध्यमान का वर्ग	F	सार्थकता
1	प्रतीपगमन	384.727	3	128.242	2.351	.079*
	रेज़ीड्युल	4145.261	76	54.543		
	योग	79				

*.05 सार्थकता स्तर

© NCERT not to be republished

तालिका 6— अभिभावकीय दबाव, अभिभावकीय सहभागिता का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में पृथक रूप से योगदान

मॉडल	अप्रमाणिक गुणांक		मानकीकृत गुणांक	t-मान	सार्थकता स्तर
	बीटा	*मानक त्रुटि*	*बीटा*		
कॉन्सटैन्ट	68.087	7.327		9.292	.000
अभिभावकीय दबाव	−.140	.322	−.051	−.435	.665*
अभिभावकीय सहभागिता	.405	.185	.246	2.192	.031*
विद्यालय का प्रकार	2.214	1.729	.147	1.281	.204*

*.05 सार्थकता स्तर

अभिभावकीय सहभागिता का बीटा मान .246 एवं t-मान 2.192 है, जिसका प्रायिकता मान .031 है, जो .05 सार्थकता स्तर के प्रायिकता मान से कम है, अतः यह .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। इसका अर्थ यह है कि अभिभावकीय सहभागिता पृथक रूप में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से पूर्वानुमानित करती है। इसका कारण यह हो सकता है कि कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थी विभिन्न अधिगम संबंधी कार्यों के लिए अभिभावकों पर आश्रित होते होंगे।

विभिन्न प्रकार के विद्यालयों का बीटा मान .147 एवं t-मान 1.281 है, जिसका प्रायिकता मान .204 है जो .05 सार्थकता स्तर के प्रायिकता मान से अधिक है, अतः यह .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इसका अर्थ यह है कि विद्यालय का प्रकार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के पूर्वानुमान में पृथक रूप से कोई सार्थक योगदान नहीं देता। इसका एक प्रमुख कारण संभवतः यह हो सकता है कि वर्धा में सी.बी.एस.ई. एवं स्टेट बोर्ड के विद्यालयों के कार्य करने के तरीकों में कोई विशेष अंतर नहीं है। इन विद्यालयों की गतिविधियों में अभिभावकों की सहभागिता के स्तर तथा विद्यार्थियों के मध्य प्रतिस्पर्धा के स्तर में व्यापक अंतर प्रतीत नहीं होता है।

विवेचना एवं निष्कर्ष

उपर्युक्त परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होते हैं कि अभिभावकीय सहभागिता, अभिभावकीय दबाव एवं विद्यालय के प्रकार का संयुक्त स्वरूप विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक (0.05 सार्थकता स्तर पर) रूप से पूर्वानुमानित नहीं करता है। इसका कारण संभवतः यह हो सकता है कि वर्धा में परिवारों, समाज तथा विद्यालयों का माहौल ऐसा नहीं होता कि अभिभावकीय हस्तक्षेप अत्यधिक हो,

© NCERT not to be republished

जो नकारात्मक रूप लेते हुए शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों में अधिक दबाव उत्पन्न कर सके तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित कर सकें।

नागपाल (2016) के अध्ययन से प्राप्त परिणाम यह प्रदर्शित करता है कि अभिभावकीय दबाव बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर ऋणात्मक प्रभाव डालता है। शर्मा (2014) ने शोध अध्ययन में पाया कि अभिभावकीय दबाव तनाव को बढ़ाता है तथा तनाव कभी-कभी आत्महत्या का कारण बनता है। चेन (2012) ने शोध अध्ययन से यह स्पष्ट किया है कि अभिभावकीय दबाव के बढ़ने से दुश्चिन्ता भी बढ़ती है। अभिभावकीय व्यवसाय, आय और माता की शैक्षिक पृष्ठभूमि अभिभावकीय दबाव को बढ़ाती है। इस अध्ययन में उच्च प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि और अभिभावकीय दबाव के मध्य अत्यंत निम्न कोटि का ऋणात्मक सहसंबंध है, जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अभिभावकीय दबाव पृथक रूप में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से पूर्वानुमानित नहीं करता है।

नागपाल (2016) विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावकीय हस्तक्षेप के प्रभाव का अध्ययन किया है, उन्होंने निष्कर्ष में पाया कि अभिभावकीय हस्तक्षेप वाले विद्यार्थियों तथा अन्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। फैन और चेन (1999) ने शोध अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि अभिभावकीय सहभागिता विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। इस शोध अध्ययन से प्राप्त परिणाम उपरोक्त अध्ययनों का समर्थन करते हैं, क्योंकि इस अध्ययन में यह पाया गया है कि अभिभावकीय सहभागिता तथा विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्य 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक धनात्मक सहसंबंध है, हालाँकि इसका प्रभाव आकार बहुत कम है। अभिभावकीय सहभागिता 0.05 सार्थकता स्तर पर पृथक रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सार्थक रूप से पूर्वानुमानित करती है।

वर्तमान शोध अध्ययन तथा संबंधित पूर्व शोध अध्ययन इस ओर संकेत करते हैं कि प्राथमिक स्तर पर अभिभावकीय सहभागिता अधिक होती है तथा जैसे-जैसे बच्चा उच्च कक्षाओं में पहुँचता है, अभिभावकीय सहभागिता में कमी आती है। उच्च प्राथमिक स्तर पर भी अभिभावकीय सहभागिता बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि के लिए महत्वपूर्ण होती है, किंतु इस स्तर पर अभिभावकीय सहभागिता निम्न विद्यालयी स्तरों की तुलना में कम हो जाती है। उच्च प्राथमिक स्तर से अभिभावकों की आकांक्षा विद्यार्थियों की सहभागिता में परिवर्तन लाती है, जो अभिभावकीय दबाव को बढ़ा सकती है। इस कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकती है।

कोच (2008) ने शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त किया था कि विद्यालयी परामर्श तथा विद्यालयी वातावरण शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस शोध अध्ययन में विद्यालय के प्रकार एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक

© NCERT not to be republished

सहसंबंध प्राप्त हुआ है, परंतु यह .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इसका कारण संभवतः यह है कि वर्धा में सी.बी.एस.ई. एवं स्टेट बोर्ड के विद्यालयों के कार्य करने के तरीकों में कोई विशेष अंतर प्रतीत नहीं होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

- यह शोध अध्ययन दर्शाता है कि वर्धा शहर के सरकारी विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अभिभावकीय दबाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को ऋणात्मक रूप से पूर्वानुमानित करता है, किंतु यह प्रभाव 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। किंतु हो सकता है कि आने वाले समय में वर्धा में समाज, विद्यालयों तथा परिवारों का माहौल अन्य कई शहरों की तरह अधिक प्रतिस्पर्धात्मक हो तथा अभिभावकीय हस्तक्षेप बहुत अधिक हो तथा नकारात्मक रूप लेते हुए शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों में अधिक दबाव उत्पन्न करे तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करे। अतः इस दिशा में शिक्षकों, अभिभावकों, परामर्शदाता और समुदाय के सदस्यों द्वारा व्यापक रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए तथा विद्यालयी गतिविधियों और विद्यार्थियों के अधिगम में अभिभावकों के सकारात्मक हस्तक्षेप को बढ़ावा देने हेतु विद्यालयों द्वारा आवश्यक कार्यक्रम/योजना तैयार करनी चाहिए तथा अभिभावकों को जागरूक करना चाहिए कि वे अपने बच्चों को अपनी गति से सीखने के अवसर प्रदान करें और अभिप्रेरित करें।
- यह शोध दर्शाता है कि अभिभावकीय सहभागिता विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाती है। अतः अभिभावकों को विद्यार्थियों की अधिगम संबंधित गतिविधियों में पूर्ण रूप से सहयोग देना चाहिए। उन्हें विद्यार्थियों को उनके गृहकार्य को पूरा करने में आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए। विद्यालय में उनके बच्चों के लिए आयोजित होने वाली गतिविधियों में उन्हें व्यापक रूप से प्रतिभाग लेना चाहिए।
- विद्यालयी पाठ्यक्रम में उपयोगी, रुचिकर एवं विषय आवश्यक पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में अभिभावकों के प्रतिभाग हेतु उचित प्रयास किया जाना चाहिए।
- परामर्शदाता को विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति के संबंध में आवश्यक निर्देशन प्रदान करने हेतु अभिभावकों की व्यापक सहायता लेनी चाहिए।
- विभिन्न विद्यालयी गतिविधियों में शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा अभिभावकों के मध्य अंतःक्रिया के व्यापक अवसर उपलब्ध होने चाहिए।

संदर्भ

ईक्लेज, जे. एस. और आर. डी. हैरॉल्ड. 1993. पैरेन्ट-स्कूल इनवॉल्वमेंट ड्यूरिंग द अर्ली एडॉल्सेंटयीयर्स. *टीचर कॉलेज रिकार्ड*. 94(3), पृ. 568–87.

एपसटीन, जे. एल. 2001. *स्कूल, फ़ैमिली एंड कम्यूनिटी पार्टनरशिप*. वेस्टिव प्रेस, बाउल्डर, सीओ.

© NCERT not to be republished

——. 2005. अटैनेबल गोल? द स्प्रिट एंड लेटर ऑफ़ द नो चाइल्ड लेफ्ट बिहाइंड एक्ट ऑन पैरेन्टल इनवॉल्वमेंट. *सोशियोलॉजी ऑफ़ एजुकेशन*. 78, पृ. 179–182.

एब्लॉर्ड, के. ई., वी. एल. हॉफ़िन्स, और सी. जे. मिल्स. 1996. द *डेवलपमेंटल स्टडी ऑफ़ टैलेंटेड यूथ — द पार्टिसिपेंट्स*. जोहन्स होपकिंस यूनिवर्सिटी, सेंटर फॉरटैलेंटेड यू, बाल्टीमोर.

कोच, जे. एम. 2008. *एन अर्ली एलीमेन्टरी स्कूल काउंसिलिंग ऑउटकम स्टडी— अकेडमिक एचीवमेंट, डिसीप्लीन एंड प्रो-सोशल बिहैवियर एंड स्कूल क्लाइमेट (डॉक्टोरल डिज़र्टेशन)*. 28 जनवरी, 2018 को प्रोक्यूस्ट इनफ़ॉर्मेशन एंड लर्निंग (AAI3328318)Google Scholar से प्राप्त किया गया है.

कॉक्स, डी.डी. 2005. एविडेन्स-बेस्ड इंटरवेंशंस यूज़िंग होम-स्कूल कोलेबोरेशन. *स्कूल साइकोलॉजी क्वार्टरली*. 20(4), पृ. 473–97.

क्सु, एम., एस.एन. कुशनरबेनसन, आर. मुड्रे-कैमिनो, और आर.पी. स्टीनर. 2010. द रिलेशनशिप बिटवीन पैरेन्टल इनवॉल्वमेंट, सेल्फ़-रेगुलेटेड लर्निंग, एंड रीडिंग अचीवमेंट ऑफ़ फिफ्थ ग्रेडस— ए पाथ एनालिसिस यूज़िंग द ई. सी. एल. एस. के. — डेटाबेस. *सोशल साइकोलॉजी ऑफ़ एजुकेशन— एन इंटरनेशनल जर्नल*. 13(2), पृ. 237–269. doi:10.1007/s11218-009-9104-4 से प्राप्त किया गया है.

चेन, एच. 2012. इम्पैक्ट ऑफ़ पैरेन्ट्स सोशियो-इकोनॉमिक स्टैट्स ऑन प्रसीव्ड पैरेन्टल प्रेशर एण्ड टेस्ट एनज़ायटी अमंग चाइनीज़ हाई स्कूल स्टूडेण्ट्स. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइकोलॉजी स्टडीज़*. 4(2), पृ. 235–245. 12, 2018, http://dx.doi.org/10.5529/ijps.v4n2p235

चाऊ, एस. एस. और एम. एच. चू. 2007. द इम्पैक्ट ऑफ़ फीलियाल पीटी एंड पैरेन्टल इनवॉल्वमेंट ऑन अकेडमिक अचीवमेंट मोटिवेशन इन चाइनीज़ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेण्ट्स. *एशियन जर्नल ऑफ़ काउंसिलिंग, स्पेशल इश्यू — इण्टरनेशनलाइज़ेशन एंड इण्टरनेशनल पब्लिशिंग इन काउंसिलिंग*. 14(1-2), पृ. 91–124.

टोर्रेतेहर्नान्डेज, जी. और ए. टी. वजसोनयी. 2008. द साइलेंस ऑफ़ द फ़ैमिली इन एंटीसोशल एंड डिलिन्क्यूट बिहैवियर्स अमंग स्पैनिश एडॉल्सेन्ट्स. *जर्नल ऑफ़ जेनेटिक साइकोलॉजी*. 169, पृ. 189–197.

डेसफोर्गेस, सी. और अबोचैर, ए. 2003. *दी इम्पैक्ट ऑफ़ पैरेन्टल इनवॉल्वमेंट, पैरेन्टल सपोर्ट एंड फ़ैमिली एजुकेशन ऑन प्यूपिल एचीवमेंट एंड एडजेस्टमेंट —रिसर्च रिपोर्ट 433*. डिपार्टमेंट फ़ॉर एजुकेशन एंड स्किल्स, लंदन.

नागपाल, एम. और सी. सिंह. 2016. प्रसीव्ड पैरेन्टल प्रेशर एंड अकेडमिक अचीवमेंट अमंग स्टूडेंट्स एक्सप्लोरिंग द मीडियेटिंग इफ़ेक्ट ऑफ़ टेक्ट्स एनज़ायटी अमंग स्कूल स्टूडेंट्स. *ओपन जर्नल ऑफ़ एजुकेशन साइकोलॉजी*. अप्रैल, 2018 को https://researchgate.net/publication/308264786 से प्राप्त किया गया है.

फुलिग्नी, ए. जे. और एस. पेडरसन. 2002. फ़ैमिली ऑब्लीगेशन एंड द ट्रांज़िशन टू यंग एडल्टहुड. *डेवलपमेंट साइकोलॉजी*. 38, पृ. 856–868.

फैन, एक्स. और एम. चेन. 1999. *पैरेन्टल इनवॉल्वमेंट एंड स्टूडेंट्स अकेडमिक एचीवमेंट — ए मेटा-एनालिसिस*. पेपर प्रज़ेन्टेड एट द एनुअल मीटिंग ऑफ़ द अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च एसोसिएशन, मॉन्ट्रियल, सीएईडी 430048.

मैकमिलन, आर. 1998. *पैरेंटल प्रेशर एंड प्राइवेट स्कूल कॉम्पटिशन— एन एम्पिरिकल एनालिसिस ऑफ़ द डिटरमिनेंट्स ऑफ़ पब्लिक स्कूल क्वालिटी*. 13 नंवबर, 2017 को https://pdfs.semanticscholar.org/2796/264ad6f19c53fb48efe16febb15e58cb75b6.pdf से प्राप्त किया गया है.

© NCERT not to be republished

हाइसन, एम. सी., हरीश-पासेक, के., रिकोरल, एल., जेसिका, सी. और एल. मार्टल-बॉइनसेक. 1991. इनग्रेडियंटस ऑफ़ पैरेन्टल प्रेशर इन अर्ली चाइल्डहुड. *जर्नल ऑफ़ एप्लाइड डेवलपमेंट साइकोलॉजी*. 12(3), पृ. 347–365. 17 जनवरी, 2020 को doi:10.1016/0193-3973(91)90005-o से प्राप्त किया गया है.

शर्मा, ए. 2014. *पैरेन्टल प्रेशर फ़ॉर अकेडमिक सक्सेस इन इंडिया*. 02 जून, 2017 को https://repository.asu.edu/attachments/137354/content/Sarma_asu_0010E_14259.pdf से प्राप्त किया गया है.

संगमा, ज़ेड. एम., शांतिबाला, के., सिंह, बी.ए., मैसनम, ए.बी., विसी, वी. और वनलालदुशकी. 2018. परसेप्शन ऑफ़ स्टूडेंट्स ऑन पैरेन्टल एंड टीचर्स प्रेशर ऑन दियर अकेडमिक परफ़ॉर्मेंस. *जर्नल ऑफ़ डेन्टल एंड मेडिकल साइंस (IOSR-JDMS)*. 17(01), पृ. 68–75. 01 जून, 2018 को www.iosrjournals.org/iosrjdms/papers/Vol17-issue1/Version-1/M1701016875.pdf से प्राप्त किया गया है.

http://living.thebump.com/effects_academic_parentalpressure

https://www.yourfamily.co.za/family-life/parental-pressure/amp

http://www.mordenmom.com

© NCERT not to be republished